Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

संत और सनातन धर्म

डॉ0 योगेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी

आचार्य एवं अध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग, का0सु0साकेत पी0जी0 कालेज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश।

Article Info

Publication Issue :

Volume 6, Issue 1

January-February-2023

Page Number : 74-79

Article History

Accepted : 01 Feb 2023

Published : 25 Feb 2023

शोधसारांश– संत समाज की प्रासंगिकता एवं उपयोगिता इस तथ्य से प्रमाणित होती है कि अधिकांश संत दान एवं भिक्षाटन कर अपने आश्रम, मठ का देखभाल करते हैं एवं हिन्दू समाज उन्हें दान देने में सदैव तत्पर रहता है। वहीं सनातन धर्म जो समाज में व्याप्त सभी प्रकार के भेदभावों एवं असमानताओं को जड़–मूल से नष्ट कर नागरिकों में परस्पर प्रेम एवं सौहार्द में वृद्धि तथा सभी वर्गों में एकता का संचार करती है। सनातन संस्कृति में जाति, वर्ण, समुदाय, कुल, वंश, रंग के आधार पर भेदभाव जैसा किसी व्यवस्था के प्रचलन का प्रमाण नहीं मिलता है।

मुख्य शब्द– संत, सनातन, धर्म, समाज, आश्रम, मठ, हिन्दू।

सनातन धर्म की जब भी बात हुयी है तो इसमें संत की भूमिका को महत्वपूर्ण स्थान मिला है। सनातन धर्म व संत की उत्पत्ति एक साथ हुई है। मनुष्य हमेशा ईश्वर का बोध करना चाहता है, मनुष्य हमेशा सोचता है विचार करता है कि कौन सी ऐसी सत्ता है किसने उसको बनाया है वह हमेशा जानने के लिए प्रयासरत रहता है। इसका उत्तर बस संत और सनातन के सानिध्य से ही प्राप्त हो सकता है। संत की व्याख्या कठिन है अपितु कई प्रकार से इस शब्द की व्याख्या की गई है। जो व्यक्ति धार्मिक पुरुष और ईश्वर की भक्ति में लीन रहते हैं उन्हें सन्त कहते हैं। संत हमारे सनातनी परम्परा हैं, संत हमारे सनातन धर्म एवं भारतीय संस्कृति को संरक्षित रखते हैं। संत वह है जिसे ईश्वर का बोध हो गया हो, जो जीवन मृत्यु के बीच और उसके बाद होने वाले स्थिति का ज्ञान प्राप्त करके विचलित न हो अर्थात् संत से अभिप्राय है जिसे सत की अनुभुति हो गई हो।

दोहाः– मुद मंगलमय संत समाजू।
जो जग जंगम तीरथराजू।।[1]

संत तुलसीदास जी ने श्री रामचरितमानस में कहा है , संत का समाज कल्याणकारी और आनन्दमयी है। संत इस जगत में चलते फिरते तीरथराज प्रयाग हैं। संतो की साधना और उनकी वाणियों का प्रचार–प्रसार व प्रभाव सम्पूर्ण देश में हुआ है। संतो ने **'सत'** और **'राम'** दो शब्दों के द्वारा परमतत्व का उल्लेख किया है। वह सत् इसलिए है कि उसका अस्तित्व है और 'राम' इसलिए है कि सम्पूर्ण वृत्तियों के रमण का एक मात्र क्षेत्र है। सनातन धर्म– सत्यम शिवम सुन्दरम ' यह पथ सनातन है। मनुष्य और समस्त देवता इसा मार्ग से पैदा हुए हैं।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Shauryam Research Institute. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

सनातन का अर्थ है जो शाश्वत हो, जो सर्वदा सत्य हो। जिन बातों का जिन विचारों का शाश्वत महत्व हो वह सनातन कहा जा सकता है। सनातन का अर्थ है सदा बने रहने वाला अर्थात् जिसका न आदि है न अन्त। सनातन धर्म मूलतः भारतीय हिन्दू धर्म है। सनातन धर्म जिसे हिन्दू धर्म अथवा वैदिक धर्म भी कहा जाता हैं। सरल शब्दों में कहा जाय तो ईश्वर भी सनातनी हैं। जिसका न आदि है न अन्त, जो सर्वदा सत्य है, सदा बने रहने वाला है। सनातन धर्म ही है जो ईश्वर, आत्मा, परमात्मा का ज्ञान, मोक्ष के तत्व और ध्यान से जानने का मार्ग बताता है। आत्मज्ञान और ईश्वर का ज्ञान ही मोक्ष की तरफ ले जाता है और यही सनातन धर्म का सत्य है। सनातन धर्म का मूल तत्व– सत्य, अहिंसा, दया, क्षमा, दान, जप, तप, यम, नियम आदि है जिनका शाश्वत महत्व है।[2]

सनातन धर्म उस परम कल्याण की बात करता है, जो कि एकमात्र कल्याणकारी है जिसकी वैश्विक धरा आकांक्षा कर सकती है। संत की उपाधि उन्हे दी जाती है जिनका आचरण सत्य होता है। प्राचीनकाल में कई आत्मज्ञानी व सत्यवादी लोग थे, जिन्हे संत कहा जाता था। जैसे– संत तुलसीदास इन्होंने श्रीराम चरितमानस जैसे महाकाव्य की रचना की जिसमें श्रीराम से चरित्र का वर्णन यह परिलक्षित करता है कि हमारे समाज तथा सम्पूर्ण मानव जाति को धर्म के मार्ग पर चलने और अच्छे चरित्र का निर्माण किया जा सकता है।

दोहाः– बंदउँ संत समान चित हित अनहित नाहिं कोई।
अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोई।।[3]

संत तुलसीदास जी ने श्री रामचरितमानस में कहा है, जैसे अंजलि में रखे हुए फूल जिस हाथ ने फूलों को तोड़ा है और जिसने उसको अपने हाथ में रखा है उन दोनों के हाथों को समान रूप से सुगंधित करते हैं ठीक उसी प्रकार संत शत्रु और मित्र दोनों ही का समान रूप से कल्याण करते हैं।

दोहाः– जड़ चेतन मुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार।।[4]

संत तुलसीदास जी ने श्री रामचरितमानस में कहा है ईश्वर ने जड़ चेतन व विश्व को गुण और अवगुण (दोषमय) दोनों प्रकार से रचना की है। संत उस हंस की तरह हैं जैसे हेस पानी में मिले दूध को हंस अलग करके दूध को पीता है ठीक उसी प्रकार संत अवगुण दोष रूपी जल को छोड़कर उसको अलग कर गुण रूपी दूध को ग्रहण करते हैं।

संतों की विशेषताएं–

1– संत आत्मज्ञानी होते हैं। 2– संत विद्वान होते हैं। 3– संत सत्यवादी होते हैं।
4– संत तत्वज्ञानी होते हैं। 5– संत परमार्थी होते हैं। 6– संत कल्याणकारी होते हैं।
7– संत करूणामयी होते हैं। 8– संत दयालू प्रवृत्ति के होते हैं। 9– संत अहिंसक होते हैं।
10– संत संसार और आध्यात्म के बीच का अनुभव रखते हैं। जैसे– संत तुलसीदास।
11– संत सनातनी होते हैं। 12–संत जीवन और मृत्यु के बीच और उसके बाद का ज्ञान रखते हैं।
13–संत सभी से एक सा व्यवहार करते हैं। 14–संत हमेशा प्रसन्नचित रहते हैं। 15–संत सज्जन होते हैं।

महापुरूष जो सत् अर्थात् ब्रह्म, जीव एवं माया का बोध कराएं वे ही आली संत हैं, इसके अतिरिक्त संत जगत के समस्त प्राणियों के कल्याण हेतु कार्य करते रहते हैं।

सनातन धर्म हिन्दू धर्म ही है। जो व्यक्ति संसार से विरक्त हो, सन्यासी हो वही संत है। जो समाज में रहकर सन्यास धारण करें वहीं संत है। धर्मशास्त्र के इतिहास में संत, सन्यास के कर्त्तव्यों और लक्षणों को बताया गया है जो निम्न रूप से हैं–

1– संत को दीक्षा लेने के उपरान्त यज्ञ करना चाहिए। अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति को असहायों, गरीबों, पुरोहितों और सामाजिक कार्यों में बाँट देना चाहिए।

2– संत को सदा अकेले घूमना चाहिए या संतों की टोली में घूमना चाहिए। गृहस्थों के साथ भ्रमण नहीं करना चाहिए।

3– संत को ब्रह्मचारी होना चाहिए, ध्यान व आध्यात्मिकता में स्वयं को संलग्न करना चाहिए।

4– संत को सभी भूखों का भरण–पोषण करना चाहिए।

5– संत को अपने गुरू से प्राप्त दीक्षा का जप करना चाहिए।

6– संत को सदाचार का पालन करना चाहिए।

संत जीवन में मुख्यतः निम्नलिखित बातें समाहित हैं–

1– वेद मंत्रों का उच्चारण करते हैं।

2– अपने सम्प्रदाय, पंथ के प्रतीक चिन्हों को सदा धारण करते हैं।

3– अपने सम्प्रदाय, पंथों प्रतीकों के अनुसार रहन–सहन व वस्त्रों को धारण करते हैं।

4– निरंतर जिस आश्रम, मन्दिर, मठ में रही रहे हों वहां के भगवान को भोग लगाते हैं।

सम्प्रदाय क्या है? एक ही धर्म के प्रति अलग–अलग परम्परा या विचार रखने व मानने वाले वर्गों को सम्प्रदाय कहते है। प्राचीनकाल के समय में देव, असुर, गंधर्व, किन्नर, नाग, भल्ल, वराह, दानव, यक्ष, राक्षस, पिशाच, किरात, बेताल, वानर, कूर्म, कमठ, कोल, यातुधान चारण आदि प्रकार की जातियां हुआ करती थीं। सम्प्रदाय के अन्तर्गत गुरु–शिष्य परम्परा चलती है जो गुरु द्वारा प्रतिपादित परम्परा को पुष्ट करती है। संप्रदाय का आधार धर्मग्रंथ वेद ही है।

हिन्दू धार्मिक सम्प्रदाय–

शैवाश्च वैष्णवाश्चैव शाक्ताः सौरास्तथैव च। गणपत्याश्च ह्ययागामाः प्रणीताः शंकरेण तु।।[5]

1– शैव सम्प्रदाय 2–वैष्णव सम्प्रदाय 3–शाक्त सम्प्रदाय 4–सौर सम्प्रदाय 5–गणपत्य सम्प्रदाय

सनातनी संतों की सम्प्रदाय की संरचना संतों के समाज में हर सम्प्रदाय की अलग–अलग पहचान है और सम्प्रदाय की पहचान उसके अलग–अलग प्रकार के तिलक से ही होता है। हमारे सनातन धर्म में तिलक लगाने की परम्परा आज की नहीं है यह परम्परा आदि काल से चली आ रही है। तिलक 80 प्रकार से ज्यादा प्रकार से लगीए जाते हैं। सबसे ज्यादा 64 प्रकार के तिलक वैष्णव सम्प्रदाय के रामानन्दी संतों द्वारा लगाये जाते हैं।

वैष्णव सम्प्रदाय– यह सम्प्रदाय भगवान विष्णु को मानने वाला सम्प्रदाय है। यह सम्प्रदाय भगवान विष्णु का प्रतीक है। वैष्णव सम्प्रदाय जिसको रामानन्द सम्प्रदाय भी कहते हैं। रामानन्द सम्प्रदाय के संत, रामानन्दी इस तिलक से पहले अपने मस्तक पर सफेद विष्णु तिलक लगाते हैं उसके बाद उनके बीच में लाल चन्दन या कुमकुम से खड़ी रेखा बनाई जाती है। इसमें श्याम श्री तिल कवह संत लगाते हैं जो भगवान श्री कृष्ण के उपासक होते हैं। इस तिलक को लगाने के लिए आस–पास

पहले गोपीचन्दन की व बीच में एक काले रंग की मोटी रेख बनाई जाती है। विष्णु स्वामी तिलक, संत इस तिलक को अपने माथे पर लगाने के लिए भौहों के बीच में दो चौड़ी रेखाएं बनाते हैं।

भगवान विष्णु के अवतारः– शास्त्रों में भगवान विष्णु के 24 अवतारों का वर्णन है।

श्रीमद्भगवत महापुराण में अनुसार भगवान विष्णु के 24 अवतारों का वर्णन निम्नलिखित है–1. आदि परुषु, 2. ब्रह्म के पुत्र–चार सनतकुमार (सनक, सनन्दन, सनातन व सनत्कुमार हैं) 3. वराह 4. नारद 5. नर–नारायण 6. कपिल 7. दत्तात्रेय, 8. याज्ञ 9. ऋषभ 10. पृथु 11. मत्स्य 12. कच्छप 13. धन्वंतरि 14. मोहिनी 15. नृसिंह 16. हयग्रीव 17. वामन 18. परशुराम 19. व्यास 20. राम 21. बलराम 22. कृष्ण 23. बुद्ध और 24. कल्कि।[6]

वैष्णव ग्रंथः– ऋग्वेद में वैष्णव विचारधारा का उल्लेख मिलता है। ईश्वर संहिता, पाद्मतन्त, विष्णु संहिता, शतपथ ब्राह्मण, ऐतरेय ब्राह्मण, महाभारत, रामायण, विष्णु पुराण आदि।

वैष्णव पर्व और व्रतः– एकादशी, चार्तुमास, कार्तिक मास, श्रीरामनवमी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, होली, दीपावली आदि।

वैष्णव तीर्थ : बद्रीधाम, मथुरा, अयोध्या, तिरुपति बालाजी, श्रीनाथ, द्वारकाधीश।

शैव सम्प्रदाय– भगवान शिव तथा उनके अवतारों को मानने वालों को शैव कहते हैं। शैव में शाक्त, नाथ, दसनामी, नाग आदि उप संप्रदाय हैं। शैव सम्प्रदाय के संत भगवान शंकर के उपासक होते हैं। यह त्रिपुण्ड लगाते हैं, इस सम्प्रदाय के संत अपने माथे पर चंदन की या भस्म की तिरछी रेखा बनाते हैं।

शिव के अन्य 11 अवतारः–1.कपाली 2. पिंगल 3. भीम 4. विरुपाक्ष 4. विलोहित 6. शास्ता 7. अजपाद 8. आपिर्बुध्य 9. शम्भू 10. चण्ड तथा 11. भव यह ग्यारह अवतार हैं।[7]

इन अवतारों के अलावा शिव के दुर्वासा, हनुमान, महेश, वृषभ, पिप्पलाद, वैश्यानाथ, द्विजेश्वर, हंसरूप, अवधूतेश्वर, भिक्षुवर्य, सुरेश्वर, ब्रह्मचारी, सुनटनतर्क, द्विज, अश्वत्थामा, किरात और नतेश्वर आदि अवतारों का उल्लेख भी 'शिव पुराण' में हुआ है जिन्हें अंशावतार माना जाता है।

शैव ग्रंथः– वेद का श्वेताश्वतरा उपनिषद , शिव पुराण, आगम ग्रंथ और तिरुमुराई।

शैव व्रत और त्योहारः– चतुर्दशी, श्रावण मास, शिवरात्रि, रुद्र जयंती, भैरव जयंती आदि।

शैव तीर्थ – 12 ज्योतिर्लिंगों के नाम– सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर, केदारेश्वर, भीमाशंकर, विश्वनाथ, त्रर्यंबकेश्वर, वैद्यनाथ, नागेश्वर, रामेश्वर, घुष्मेश्वर (घृष्णेश्वर)।

शैव सम्प्रदाय के संस्कार निम्नलिखित हैं :–

- शैव सम्प्रदाय के संत जटा रखते हैं।
- शैव सम्प्रदाय के सन्यासी चोटी नहीं रखते हैं।
- इस सम्प्रदाय के सन्यासी लोग हाथ में, चिमटा, कमण्डल या त्रिशूल रखते हैं साथ में धुनि भी रमाये रहते हैं।
- इस सम्प्रदाय में समाधि लेने व देने दोनों की भी परम्परा है।
- इस सम्प्रदाय के लोग जहाँ जिस मन्दिर में पूजा पाठ करते हैं उस मन्दिर को शिवालय कहा जाता है।
- इस सम्प्रदाय के सन्त भभूति, त्रिपुण्ड व भस्म लगाते हैं साथ ही साथ रूद्राक्ष की माला भी पहनते हैं व उसी से जप भी करते हैं।
- इस सम्प्रदाय के सन्त, साधुओं को अघोरी, अवधूत, बाबा, नागा साधु, औघड़ व योगी भी कहते हैं।

इस सम्प्रदाय के संतों में गुरू मत्येन्द्र नाथ, गुरू गोरखनाथ, आदि गुरू शंकराचार्य, लकुलेश आदि संत जगत प्रसिद्ध हैं। इसमें मुख्य रावण, गोकर्ण, जय विजय भी शैव सम्प्रदाय में आते हैं।

इस परम्परा में आदि गुरू भगवान दत्तात्रेय भी आते हैं।

शाक्त सम्प्रदाय– मां पार्वती को शक्ति भी कहते हैं। वेद, उपनिषद और गीता में शक्ति को प्रकृति कहा गया है। प्रकृति कहने से अर्थ वह प्रकृति नहीं हो जाती। हर मां प्रकृति है। जहां भी सृजन की शक्ति है, वहां प्रकृति ही मानी गई है इसीलिए मां को प्रकृति कहा गया है। प्रकृति में ही जन्म देने की शक्ति है। शाक्त संप्रदाय को शैव संप्रदाय के अंतर्गत माना जाता है। शाक्तों का मानना है कि दुनिया की सर्वोच्च शक्ति स्त्रैण है इसीलिए वे देवी दुर्गा को ही ईश्वर रूप में पूजते हैं। जो संत शक्ति के उपासक होते हैं वह शाक्त सम्प्रदाय में आते हैं। शाक्त सम्प्रदाय के संत सिंदूर का तिलक लगाते हैं ऐसा संतों का मानना है सिंदूर का तिलक लगाने से साधक की शक्ति बढ़ती है। ज्यादातर शाक्त सम्प्रदाय के संत कामाख्या देवी के सिंदूर का प्रयोग करते हैं। इस सम्प्रदाय के लोग देवी महात्मय, देवीभागवत पुराण तथा शाक्त उपनिषदों में आस्था रखते हैं। इस सम्प्रदाय का भी उददेश्य मोक्ष है। इस सम्प्रदाय के लोग शक्ति की उपासना करते हैं। शक्ति ही जीवन है, शक्ति ही धर्म है, शक्ति ही सत्य है, शक्ति ही सर्वत्र व्याप्त है इस तरह की आस्था रखते हैं।[8]

धर्म ग्रंथः– शाक्त संप्रदाय में देवी दुर्गा के संबंध में 'श्रीदुर्गा भागवत पुराण' एक प्रमुख ग्रंथ है जिसमें 108 देवी पीठों का वर्णन किया गया है। उनमें से भी 51–52 शक्तिपीठों का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसी में दुर्गा सप्तशती भी है।

सौर सम्प्रदाय– सनातन धर्म में और सौर सम्प्रदाय के संत भगवान सूर्य के उपासक माने जाते हैं। यह सम्प्रदाय वैदिक काल से ही अस्तित्व में है। सनातन धर्म की वर्ण व्यवस्था में सूर्य की उपासना का उल्लेख मिलता है। ब्राह्मणों में संध्या कर्म में सूर्य की उपासना की ही वर्णन है। वेदों में सूर्य की स्तुतियां हैं जिनमें मुख्य **''चक्षुषो उपनिषद''** है। इस सम्प्रदाय के संत मस्तक पर गोलाकार लाल तिलक धारण करते हैं जो कि भगवान सूर्य के उदय होने का प्रतीक है।[9]

गणपत्य सम्प्रदाय– गणपत्य सम्प्रदाय से संत हिन्दू सम्प्रदाय के सदस्य हैं जो गजानन भगवान गणेश को सगुण ब्रह्म के रूप में मानकर उनकी उपासना करते हैं। इस सम्प्रदाय के संत माथे पर गोल लाल टीका लगाते हैं और कंधों पर हाथी का सिर और दांत का चिन्ह बनाते हैं।[10]

सच्चे संत धर्म के वाहक और संरक्षक होते हैं। हितोपदेश में संत–धर्म का उल्लेख इस प्रकार किया गया है–

इज्याअध्ययनदानामि तपः सत्यं धृतिः क्षमा।
अलोभ इति मार्गेयं धर्मस्याष्टविधः स्मृतः ।।
तत्र पूर्वश्चतुर्वर्गो दम्भार्थमापि सेत्यते।
उत्तरस्तु चतुर्वर्गो महात्मन्येव तिष्ठति।।[11]

संतों के लिए धर्म के आठ मार्ग बताये गए हैं जो इस प्रकार हैंः–

1–यज्ञ अथवा उपासना 2–अध्ययन 3–दान 4– तप 5–सत्य 6–सद्वृत्तियों को धारण करने की क्षमता 7– क्षमा 8– लोभहीनता ।[12]

संतों की वाणी समाज के सर्वांगीण विकास के लिए संजीवनी का कार्य करती है। भारत में आधुनिकीकरण एक संक्रमण की स्थिति से बहुत तेजी से गजर रहा है। लोग पश्चिमी सभ्यता का अनुसरण करते हुए लोग सनातन एवं संत समाज के प्रति अपना दृष्टिकोंण बदल रहे हैं जिसकी वजह से हमारे समाज पर बुरा प्रभाव देखने को मिल रहा है। भौतिकता की दौड़ में

लोगों में नैतिक पतन हो रहा है। संत समाज वृहद सनातन हिन्दू धर्म का अभिन्न अंग है। आधुनिक युग में भी भारत की भूमि संतों से भरी पड़ी है, जिनके ज्ञान एवं भक्ति के संयोग से सांसारिक मनुष्यों को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलती है। संतों ने सामाजिक एकता एवं नैतिकता को अधिक बढ़ावा दिया है, जिससे लोगों में हीन भावना समाप्त हुआ है। साथ ही साथ स्त्रियों को भी समाज में समान अधिकार एवं सम्मान प्राप्त हुआ है। संतों की मंगलमयी वाणी के आलोक में भक्ति भावना का समान रूप से पल्लवन हुआ है। वर्तमान समाज में धार्मिक नेतृत्व प्रदान करने, समाज सेवा, निराश्रित एवं पारिवारिक जीवन से ऊबे हुए लोगों को धर्म के प्रति जागरूकता , उन्हें अपने संत समाज के शरण में रखना एवं उन्हें मानसिक संतुष्टि प्रदान करने में संतों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। संत समाज की प्रासंगिकता एवं उपयोगिता इस तथ्य से प्रमाणित होती है कि अधिकांश संत दान एवं भिक्षाटन कर अपने आश्रम, मठ का देखभाल करते हैं एवं हिन्दू समाज उन्हें दान देने में सदैव तत्पर रहता है। वहीं सनातन धर्म जो समाज में व्याप्त सभी प्रकार के भेदभावों एवं असमानताओं को जड़–मूल से नष्ट कर नागरिकों में परस्पर प्रेम एवं सौहार्द में वृद्धि तथा सभी वर्गों में एकता का संचार करती है। सनातन संस्कृति में जाति, वर्ण, समुदाय, कुल, वंश, रंग के आधार पर भेदभाव जैसा किसी व्यवस्था के प्रचलन का प्रमाण नहीं मिलता है। गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं, **चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः**[13] अर्थात् मैंने गुण व कर्म के आधार पर इस सृष्टि में चार वर्णों (ब्रह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र) की रचना की है। यहां जातिगत भेदभाव का लेशमात्र भी संकेत नहीं है और यही सत्य सनातन है।

सन्दर्भ गंथ सूची

1. श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड पृ0सं 4
2. https://hindi.webdunia.com/sanatan-dharma-article/what-is-sanatana-dharma-in-hindi-116080900025_1.html
3. श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड पृ0सं 6
4. श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड पृ0सं 9
5. देवीभागवत ७ स्कन्द
6. श्रीमद्भागवत महापुराण–पेज 1.3 से 25 तथा 2.7.1 से 38, गीताप्रेस, गोरखपुर
7. शिवपुराण–गीताप्रेस, गोरखपुर
8. https://hi.wikipedia.org/wiki/ सम्प्रदाय
9. https://hi.wikipedia.org/wiki/सौर-सम्प्रदाय
10. https://hi.wikipedia.org/wiki/गणपत्य
11. हितोपदेश संत–धर्म
12. भारत की संत परम्परा, श्याम शंकर उपाध्याय, पूर्व विधिपरामर्शी मा0 राज्यपाल, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।
13. श्रीमद्भगवतगीता, (विशिष्ट संस्करण), गीताप्रेस, गोरखपुर, अध्याय–४ श्लोक–१३ पृ–१०४